SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

झारखण्ड प्रदेश के प्राचीन स्मारक का इतिहास

संगीता कुमारी सिंह, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
संगीता कुमारी सिंह, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग,
झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/02/2020
Revised on : -----
Accepted on : 12/02/2020
Plagiarism : 02% on 06/02/2020

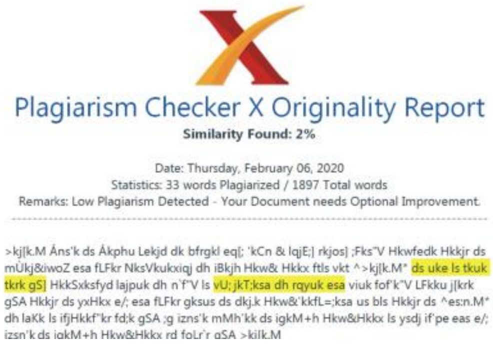

प्रस्तावना :–

भारत के उत्तर–पूर्व में स्थित छोटानागपुर की पठारी भू– भाग जिसे आज 'झारखण्ड' के नाम से जाना जाता है, भौगोलिक संरचना की दृष्टि से अन्य राज्यों की तुलना में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। भारत के लगभग मध्य में स्थित होने के कारण भू–शास्त्रियों ने इसे भारत के 'मेरूदण्ड' की संज्ञा से परिभाषित किया है। यह प्रदेश उडीशा के पहाड़ी भू–भाग से लेकर पश्चिम में मध्य प्रेदश के पहाड़ी भू–भाग तक विस्तृत है। झारखण्ड पहाड़ी श्रृंखलाओं का एक हिस्सा है। वह क्षेत्र जिसे आज हम झारखण्ड के नाम से जानते है, इतिहास के विभिन्न युगो में विभिन्न नामों से विख्यात रहा है। झारखण्ड का इतिहास भारत के इतिहास की तरह ही अत्यंत प्राचीन है। इसके इतिहास को जानने के लिए पुरातात्विक साहित्यिक स्त्रोतो के अर्न्तगत स्मारकों की स्थिति एवं स्थापत्य कला के महत्वपूर्ण संसाधनो का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास है।

मुख्य शब्द :–

सुरम्य, तारवे, यथेष्ट।

उद्देश्य :–

प्रस्तुत आलेख में झारखण्ड प्रदेश के प्रमुख स्थापत्य स्मारक मंदिर, राजप्रासाद, किला, गिरजाघर, गुरूद्वारा एवं मस्जिद इत्यादि का ऐतिहासिक अवलोकन द्वारा उसकी विशेषताओं एवं कला शैली को उजागर करना।

विषय वस्तु :–

पुरातात्विक स्त्रोतों में स्मारकों का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अंर्तगत प्राचीन इमारते मंदिर, मूर्तियाँ आदि की गणना की जाती है इनसे विभिन्न युगो की

सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का परिज्ञान होता है। यह स्त्रोत भारतीय कला के विकास का भी ज्ञान कराता है। मंदिरो, विहारो से धर्मनिष्ठा का भी पता चलता है। झारखण्ड क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर स्मारकों के अनेक अवशेष मिले है, जो वहाँ के इतिहास पर कुछ प्रकाश डालते हैं। इन स्मारको में महत्वपूर्ण है –

- चतरा के प्रतापपुर में कुंदा किला– मुगलकालीन।
- हंटरगंज के कोल्हुआ (कुलहा) पहाड़ पर एक दुर्ग का अवशेष– मुगलकालीन ।
- कलुआ पहाड़ के ऊपर हिन्दु–देवी देवता, जैन, तीर्थकरों एवं बुद्ध की मूर्तियाँ– मुगलकालीन ।
- डालटेनगंज के पास एक अधुरे किले का अवशेष जिसे राजा गोपाल राय ने बनवाया था– 18वीं सदी।
- पलामू के चेरो वंश का नया/पुराना किला –12वीं सदी।
- ईटखोरी का भद्रकाली मंदिर एवं टांगीनाथ का मंदिर।
- हापामुनी में महामाया मंदिर (1485 ई०)– 15वीं सदी।
- बोडेया मंदिर (1665–1682)–17वीं सदी।
- चुटिया में राम मंदिर –17वीं सदी।
- जगन्नाथपुर मंदिर (1691 ई०)–17वीं सदी।
- चंदवा में उग्रतारा मंदिर एवं रोहिल्ला किला।
- झारखण्ड में असुर काल की ईटें –जिनकी लम्बाई 17– ईंच चौडाई–7 ईंच तथा मोटाई 3 ईंच. है।
- पलामू का किला – मुगलकालीन।
- पलामू के 'करूआ' ग्राम में प्राप्त बौद्ध स्तूप।
- ढालभूम एवं झारखण्ड में सारंडागढ में प्राचीन दुर्ग एवं मंदिरों के भग्नावशेष।
- खूंटी अनुमंडल के 'बेलवादाग' ग्राम में भी बौद्ध विहार का टीला।
- पलामू के सतबरवा में जैन धर्म के अवशेष।
- जैन संस्कृति से सम्बंधित मूर्तियाँ एवं मंदिर पारसनाथ मे।
- हजारीबाग के सूर्यकुण्ड में भी बौद्ध मूर्तियाँ प्राप्त हुई है।
- बहरागोड़ा में उतरपाषाण कालीन अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई है।

कर्नल डाल्टन को कसाई नदी के तट पर अनेक प्राचीन मंदिरों की स्थिति एवं बनावट के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। झारखण्ड प्रदेश के मंदिरो का निर्माण जीवित आग्नेय पत्थरों से किया गया है। बुद्ध मंदिरो में चौखट तथा खंभे भी पत्थरों के ही है। मंदिरों के चारो ओर पत्थरों को तराश कर चबूतरा बनाया गया है। मुख्य द्वार से होकर गर्भगृह का निर्माण किया गया है। यहाँ बने स्तम्भों पर मनोहारी चित्रकारियाँ है तथा तारवे बने हुए है। मंदिर की छत आयताकार तथा इसके उपर गोलाकार शिखर निर्मित होता है। मुख्य प्रवेश द्वार के सामने पत्थरों का चबूतरा बनाया जाता है।

मुसलमानों की शासनावधी में छोटानागपुर में नागवंशी राजाओं का राज्य था । नागवंशी वंश के पचासवे राजा रघुनाथशाह का सम्पर्क मराठी गुरू ब्रह्मचारी हरिनाथ से हुआ। वे सगुण भक्ति शाखा से सम्बंधित थे। रघुनाथशाह ने उन्हे अपना गुरू स्वीकार किया और इन्ही गुरू की आज्ञा से तथा प्रेरणा से ही छोटानागपुर मे कई मंदिरो का निर्माण कराया । इन्होने अपनी देख–रेख में नागवंशी राज्य क्षेत्र के अनेक मंदिरो में से राँची के चुटिया, जो वर्तमान मे राँची नगर के पूर्व –दक्षिण की ओर दो मील की दुरी पर स्थित है, में '**राधावल्लभ**' मंदिर की स्थापना करायी थी ।

झारखण्ड प्रदेश एक महत्वपूर्ण जनजातिय क्षेत्र है यहाँ की धरती प्रारंभ से ही धर्मनिष्ठ रही है। यहाँ छोटे–बड़े अनेक प्राचीन हिन्दु धार्मिक स्थल तथा उनके भग्नावेश पाये जाते हैं, जो स्थानीय लोगों द्वारा सम्मानित एवं पूजीत है। ऐतिहासिक एवं वास्तुकला की दृष्टि से छोटानागपुर के विभिन्न स्थलों पर उपलब्ध मंदिरों को दो पद्धतियों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम शिव–शक्ति सूर्य पूजा पद्धति तथा दूसरी वैष्णव धर्म पद्धति ।

वैष्णव धर्म पद्धति – इस समूह के मंदिरो में चुटिया राम मंदिर, बोड़ेया के मदन मोहन मंदिर, जगन्नाथपुर के जगन्नाथ स्वामी मंदिर, हापामुनि के महामाया मंदिर, कोराम्बे के वासुदेव राय मंदिर, नावागढ़ का प्राचीन मंदिर उल्लेखनीय है।

शिव–शक्ति सूर्य पूजा पद्धति :–

इस समूह के अर्न्तगत बुढाडीह मंदिर, दिवरी मंदिर, टांगीनाथ मंदिर, महादेव मंदिर, देवधर धाम, माता चंचला देवी मंदिर, भद्रकाली मंदिर, कौलेश्वरी मंदिर मलूटी शिव मंदिर, माँ योगिनी मंदिर, महामाया मंदिर, कैथा मंदिर, देवड़ी मंदिर ।

मंदिर स्मारक के अतिरक्त झारखण्ड प्रदेश के किले, दुर्ग तथा राजप्रसाद भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। झारखण्ड प्रदेश के नागवंशावली मे नागवंशी राजाओं का वर्णन है। जिसके आधार पर यह अनुमानित है कि चुटिया इनकी राजधानी थी ।नागवंशी राजाओ की यह राजधानी लगभग साढे 7 सौ वर्षो तक रही। चूटिया मे गढ़ का निर्माण कहाँ पर किया गया था, इसका कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता है ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि राजा महाराजा हमेशा ही अपना गढ़ उस स्थान पर बनवाया करते थे, जहाँ पानी की समुचित व्यवस्था होती थी, स्थान सुरम्य तथा सुरक्षित हो इसका भी ध्यान रखा जाता था। इसलिए अनुमान है कि गढ़ स्वर्णरेखा नदी के किनारे पर रहा होगा किन्तु यथेष्ट साक्ष्य अवशेष उपलब्ध नहीं हुए है। ऐसी स्थिति में तर्क और अनुमान का ही सहारा लिया जा सकता है। इस प्रदेश के प्रमुख दुर्ग किलें या राजप्रसाद के नाम इस प्रकार है :–

- पलामू किला (लातेहार)
- रोहिल्लों का किला (पलामू)
- चैनपुर का किला (पलामू)
- कुंदा का किला (चतरा)
- तिलमी का किला (खुंटी)
- पालकोट का राजभवन (गुमला)
- नागफेनी का राजमहल (गुमला)
- रामगढ़ का किला (रामगढ)
- बादम का किला (हजारीबाग)
- पदमा का किला (हजारीबाग)
- केसानगढ़ का किला (पश्चिमी सिंहभूम)
- जगन्नाथ का किला (पश्चिमी सिंहभूम)
- जैतागढ़ का किला (पश्चिमी सिंहभूम)
- चक्रधरपुर की राजबाड़ी (पश्चिमी सिंहभूम)
- झरियागढ़ महल (धनबाद)
- रातू महाराज का किला (राँची)

- दोइसागढ़ (गुमला)

इसमें से पलामू का किला, कुंदा का किला, रामगढ़का किला मुगलशैली में निर्मित है।

आर्कियोलोजिकल सर्वे, बंगाल सर्किल के सन् 1903–04 की रिपोर्ट के अनुसार जंगलों मध्य पलामू में दो किले हैं, जिनमें से एक को नया किला और दूसरे को पुराना किला कहते हैं । दोनों का निर्माण एक ही कालखण्ड में हुआ है। किले और दीवारों की बनावट (वास्तुशिल्प) रोहतासगढ़ और शेरगढ़ के किलों की बनावट से मिलती–जुलती है। आलमगीर नामा में उल्लिखित तथ्य के अनुसार –''पलामू एक विकसित नगर की तरह था, जिसके अन्तर्गत कई बाजार थे और दो सुरक्षित किलों से आरक्षित था ।

सन् 1815 में प्रकाशित इण्डिया गजेटियर में वाल्टर हैमिल्टन ने इस जिले का विवरण कुछ इस प्रकार दिया है :–

''बिहार प्रान्त का एक जंगली और पहाड़ी जिला, जो 23–25 डिग्री अक्षांश पर अवस्थित है। पृष्ठ संख्या–101 शीर्षक खोया हुआ एक नगर, प्राचीन स्मारक यह कम उपजाऊ क्षेत्र कम्पनी का उपनिवेश है। जमीन का एक बड़ा हिस्सा वनाच्छादित पहाड़ों से भरा है और अधिकांश क्षेत्र की मिट्टी लौहयुक्त है। पलामू और नयनगर इसके प्रमुख नगर है।''

आज से लगभग 350–400 वर्ष पहले पलामू एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान हुआ करता था, जिसे यहाँ, रक्सेलों और चेरों राजाओं की राजधानी होने का गौरव प्राप्त था ।

झारखण्ड प्रदेश के स्मारकों की अपनी अलग ही विशिष्ट पहचान और कहानी है, प्रत्येक क्षेत्र का सम्बन्ध देश के अन्य राज्यों से प्रभावित भी होता रहा है। यहाँ के स्मारकों में स्थानीय विशिष्टता के साथ–साथ अन्य राज्यों के शिल्प कला की समकक्षता भी समाहित है, बंगाल, उड़िशा, मध्य प्रदेश क्षेत्र के कला का भी प्रभाव दिखता है। इसके अतिरिक्त मुगल शैली और अंग्रेजों की स्थापत्य शैली का भी प्रभाव यहाँ के स्मारक भवनों, राजप्रासादों, गिरजाघरों पर पड़ा है कुछ स्थानीय समावेश के साथ उनका निर्माण किया जाता रहा है, संगमरमर का उपयोग भी कहीं–कहीं व्यापक पैमाने पर किया गया है ।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार झारखण्ड प्रदेश में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के सम्पूर्ण स्मारकों का दर्शन किया जा सकता है। यह प्रदेश अपनी मनोरम जलवायु, जंगलों की अधिकता और दर्शनीय मंदिरों और पुरातात्विक अवशेषों की व्यापक पैमाने पर पाये जाने के कारण भारत वर्ष के अन्य राज्यों से कम महत्वपूर्ण नहीं है किंतु इसकी पहचान अभी भी उन राज्यों की तुलना में कम है । बिहार प्रान्त से अलग होने के बाद ही इस राज्य ने अपना अस्तित्व नहीं पाया है बल्कि प्राचीन साहित्यों में इसको चिन्हित किया जाता रहा है।

वर्तमान समय में यह क्षेत्र अपनी स्मारक एवं स्थापत्य विशिष्टता को प्राप्त करने में अग्रणी बन रहा है। भद्रकाली मंदिर जो ईटखोरी प्रखण्ड में स्थित है। यहाँ तीनों धर्म हिन्दु, जैन, बौद्ध का संगम है। यहाँ पर चीन से भी बड़ा बौद्ध प्रदक्षिणा पथ का निर्माण किया जाना प्रारंभ हुआ है । कौलेश्वरी मंदिर का प्रांगण भी तीनों धर्मो से प्रेणित है यहाँ भी तीव्रता से इसे व्यापक रूप में उजागर करने का प्रयास जारी है। इस प्रदेश का हर कोना अपने अन्दर स्मारक विशिष्टता को छिपाये हुए है, चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापत्यकला के रूप में इसे पहचान प्राप्त हो और यह क्षेत्र भी अन्य राज्यों की भॉति ही अपनी कलात्मकता को उजागर करे इसके लिए निरंतर सरकार द्वारा भी कार्य किए जा रहे है। यहा प्रदेश अपने धरोहर को सबसे परिचित करायें और इसे भी विशिष्टता प्राप्त हो, यही कामना है।

संदर्भ सूची :–

1. रीड, जे0 ए0, (1912), फाइनल रिपोर्ट ऑफ दि सर्वे एण्ड सेटलमेंट ऑपरेशन्स इन दि डिस्ट्रिक्ट ऑफ दि रांची, 1902–10, गवर्नमेंट प्रेस, कलकत्ता, पृ0 142।
2. दिवाकर आर0 आर0, (1956), बिहार थ्रू द एजेज, ओरिएन्ट लौंगमेन।
3. महतो, पी0, (1990), पंचपरगनिया भाषा, जनजातीय शोध संस्थान, रांची।
4. मिंज, फादर अलेक्स, (1994), झारखण्ड विरासत, रांची।
5. शर्मा, विमला चरण एवं कीर्ति, विक्रम, (1997), छोटानागपुर का भूगोल, नयी दिल्ली।
6. कुमार, लालेन्द्र, (1997), नक्सलवाद– उद्भव एवं विकास, अमर उजाला पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
7. अनुज, भुवनेश्वर, (2001), छोटानागपुर के प्राचीन स्मारक, नागपुरी संस्थान, रांची।
8. बीरोतम, बी0, (2001), झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना।
9. हेमंत झारखण्ड, (2004), प्रकाशन संस्थान दयानन्द मार्ग, दरियागंज, दिल्ली, ISBN-81–7714–106–6
10. तिवारी, राजकुमार, (2006), झारखण्ड की रूपरेखा, शिवांगन प्रकाशन, रांची।
11. पागल, अशोक, (2007), पुरातत्व और इतिहास का झारखण्डी धरोहर, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली।
12. सुधीर एवं रणेन्द्र (सं0), (2008), झारखण्ड इन्साइक्लोपीडिया, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
13. दत्त, बलबीर, (2014), कहानी झारखण्ड आंदोलन की, स्पार्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
14. कुमार, श्याम, (2015), झारखण्ड – एक सामान्य अध्ययन, स्पेक्ट्रम पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
15. सिंह, सुनील कुमार, (2016), झारखण्ड परिदृश्य, क्रॉउन पब्लिकेशन।
16. रंजन, मनीष, (2017), झारखण्ड सामान्य अध्ययन, क्रॉउन पब्लिकेशन।
17. सहाय सच्चिदानन्द, बिन्देश्वरी प्रसाद सिन्हा, मंदिर स्थापत्य का इतिहास, प्रकाशक, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना–800016
18. ओझा देवेन्द्रनाथ, झारखण्ड के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन, प्रकाशक, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली गीता प्रिन्टर्स ISBN-978–81–88803
19. श्यामाचरण दुबे, मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सुभाष मार्ग, दरियागंज।
20. नेमा मंजु, सिरपुर की देव प्रतिमाएँ, बी0 एस0 शर्मा एण्ड ब्रदर्श, आगरा।
21. झारखण्ड झरोखा, प्रथम संस्करण 2015, रांची, झारखण्ड।

****